# ''ग्रामीण महिला बी.एड. कॉलेज और शहरी महिला बी.एड़ कॉलेज की पाठ्यसहगामी और शैक्षिक क्रियाओं का अध्ययन'' (जयपुर जिले के सन्दर्भ में) पर लघु शोध प्रबन्ध

# A Study of Co-curriculum Activities and Educational Activities of Rural and Urban Women B.Ed Colleges at Jaipur

## (RAY 2018:Role of University in Women Empowerment Education)

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

**Submitted in Partial Fulfillment for the Degree**
**of**
**Doctor of Philosophy**
**(Education)**

Submitted to
JV'n Dean Manju Sharma

Submitted by
JV'n Uma Arti Joshi
Enroll. no.: JVR-1/18/10043

Department of Education & Methodology
Faculty of Education & Methodology
Jayoti Vidyapeeth Women's University
Jaipur (Rajasthan), India

**प्रस्तावना :**

शिक्षा वह ज्ञान रूपी कलम है जिसे प्राप्त कर हमारा संपूर्ण जीवन प्रकाशमान हो उठता है। शिक्षा एक ऐसा अभ्यास है जिसकी निरंतर अभ्यास से संपूर्ण अनुभव विकसित होते है।

शिक्षा वह बहुमूल्य निधि है जो स्थूल से सूक्ष्म का ज्ञान करवाती है। शिक्षा लौकिक व्यवहार का ज्ञान करवाकर सामाजिक व्यवहार करना सिखाती हैं। ज्ञान एक विकासात्मक अवधारणा हैं। निरंतर सत्य और शुद्ध तथ्यो के मापदण्ड में बदलाव के कारण किसी भी क्षेत्र के ज्ञान में पूर्णता सम्बन्धित सीमा रेखा बनाई नहीं हा सकती है। उसके विकास का छोर हमेशा खुला रहता है। निम्न चिंतन के परिप्रेक्ष्य में आज शिक्षा, शिक्षक और शिक्षण कार्यक्रमो में भी विकासात्मकता, गत्यात्मकता और अद्यनता जैसी धारणाओ के वैश्वीकरण परिवेश व समावेश के बदलने के कारण यह आवश्यक कार्यक्रम बन गया है। समय के अनुसार बदलती परिस्थिति के अनुसार अध्यापन वृति के कार्यक्रम में भी नवीन शैक्षिक मांगो का उद्‌भव हुआ है। अतः वर्तमान गतिशील समाज की आकांक्षा और मापदण्ड के अनुकूल वर्तमान शिक्षक की प्रमुख समस्या स्वयं की वृति निर्धारित करना है। इसलिए 1986 और 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा माना गया कि – ''एक सतत् प्रक्रिया के रूप में अध्यापक शिक्षा होनी चाहिए जो सेवा के पहले और सेवा के उपरान्त अनवरत प्रेरणादायी और आवश्यक हो। अपने पहले प्रयास में पूर्ण अध्यापक शिक्षा तंत्र और शिक्षण प्रक्रिया हमेशा समाज की नई तथा आवश्यकता के अनुकूल होनी चाहिए।

1986 के राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह तथ्य संलग्न किया गया कि शिक्षकों के आवश्यक और सार्थक कौशल विकास के लिए नये प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाये किसी भी बी.एड कॉलेज में होने वाले पाठ्यसहगामी और शैक्षिक क्रियाओं में सुधार आ सके। इसी तथ्य को दोहराते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया कि–**''शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमो की सार्थकता उसके ज्ञान और उसकी विषयवस्तु के सतत् विकास पर निर्भर करेगी।''** 10वी पंचवर्षीय योजना में भी इस कथन को गम्भीरता से लिया गया कि– **''शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को उन्नत अद्यतन बनाना है।''** समाज व राष्ट्र की आकांक्षा, आवश्यकता तथा आशाओं के अनुरूप यदि शिक्षक

शिक्षा संस्थानो का आउटपुट नही हुआ तो उनकी सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगेगा तथा साथ ही राष्ट्र या समाज की सभी प्रकार के उत्पादन संस्थाना की जड़े खोखली तथा कमजोर हो जायेगी। शैक्षिक संस्थानो का राष्ट्र के सर्वागीण विकास में विशेष महत्व होता है। इसलिए बी.एड कॉलेज और इनमे काम करने वाले शिक्षको द्वारा शिक्षा को पल्लवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योकि शैक्षिक परिस्थिति, आवश्यकता और परिवर्तन को ध्यान में रखकर राष्ट्र की आकांक्षाओं और आशाओ रूपी मांग पर शैक्षिक उत्पाद अर्थात् शिक्षक तैयार करने का काम बी.एड कॉलेजो के शिक्षको की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

वर्तमान में बी.एड कॉलेजो के माध्यम से राजस्थान के प्राथमिक शिक्षको को तैयार किया जा रहा है। भावी शिक्षक का निर्माण करने वाली या शिक्षक को प्रशिक्षण देने वाली संस्थाएँ या बी.एड कॉलेज के शिक्षको पर एक अच्छे शिक्षक को तैयार करने का दायित्व है। वर्तमान में आज शिक्षक प्रशिक्षण का प्रचलित रूप विद्यार्थी शिक्षक के पद को महज एक जीविकोपार्जन का साधन मान अन्य क्षेत्रो में असफल हो मजबूरन इस पद की दौड़ में दौड़ रहा है। जिससे ज्ञात होता है कि आने वाले समय में राष्ट्र निर्माता रूपी शिक्षक और पवित्र व सेवाभावी कार्य रूपी शिक्षा सिर्फ कल्पना बनकर रह जायेगी।

विकास रूपी स्तम्भ शिक्षक शिक्षा के पुनः निर्माण में काफी महत्वपूर्ण है। बी.एड कॉलेजो में प्रशिक्षणार्थियो को शिक्षण कौशलो में दक्ष किया जाता है जिससे सभी गुणो से परिपूर्ण अच्छे शिक्षक बन सके। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था का शिक्षक प्राणतंत्र कहलाता है। शैक्षिक संरचना के सक्रिय कारक के रूप में शिक्षक से शिक्षा को गति मिलती है। नई पीढ़ी के बहुमुखी व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की रचनात्मक भूमिका होती है। शिक्षक का दायित्व, व्यक्तित्व व प्रेरणा सभी का विद्यार्थियो पर एक चुम्बकीय प्रभाव छोड़ता है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता है तथा नागरिक देश के भावी कर्णधार। अतः सम्पूर्ण शिक्षा में शिक्षक महत्वपूर्ण एवं केन्द्रीयभूत पदस्थापन रखता है। बेहतर और प्रभावशाली अध्यापन के प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जिसे शिक्षा महाविद्यालयों में दिया जाता है।

अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा महाविद्यालयो मे प्रवेश के लिए अनेक आधार है सन् 1987 से पूर्व राजस्थान के शिक्षा महाविद्यालयो मे प्रवेश स्नातक स्तर पर प्राप्त अंको के आधार पर वरीयता निर्धारित कर दी जाती थी। लेकिन सन् 1987 के बाद प्रवेश का आधार ''प्री टीचर एज्यूकेशन टेस्ट (पी.टी.ई.टी) बना दिया गया। प्रशिक्षण महाविद्यालयो में प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थी को बी.एड. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करना जरूरी है। वर्तमान में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर यह परीक्षा आयोजित की जाती है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही शिक्षा महाविद्यालयो में विद्यार्थियो को प्रशिक्षण के लिए प्रवेश दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान बी.एड प्रशिक्षणार्थियो को शिक्षण का अभ्यास करवाया जाता है। उनके महाविद्यालय में पाठ्यसहगामी क्रियाएँ एवं शैक्षिक क्रियाएँ करवाई जाती है जिससे उनका शिक्षण व्यवहार भी प्रभावित होता है। विद्यालयी जीवन का महत्वपूर्ण अंग पाठ्यसहगामी क्रियाओं को माना गया है। विभिन्न वातावरण से आये बालको में सहयोग सह अस्तित्व भावना का विकास इन क्रियाओ द्वारा किया जा सकता है। विद्यालयी पाठ्यक्रम के अलावा पाठ्यक्रम को भी शिक्षाशास्त्रियो तथा मनोवैज्ञानिको ने भी महत्वपूर्ण स्थान व सम्मान दिया है। **''पाठ्य सहगामी क्रिया–क्लाप की योजना जिसका परम् उद्धेश्य व्यक्तित्व का सर्वागींण एवं सम्पूर्ण विकास है। बड़ी सुझबूझ एवं दूरदर्शिता से बनाया जानी चाहिए।''** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने पाठ्यसहगामी क्रियाओ को प्रमुख कारक बनाते हुए निम्न बाते शामिल की– **''शिक्षा राष्ट्रीय सम्बद्धता तथा कार्य नैतिकता को बढ़ावा देने वाली हो। शिक्षा का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तके हमारी संस्कृति की प्रान्तीय और साम्प्रदायिक व्याख्याओ का दमन करने वाली हो।''**

विद्यार्थियो के जीवन में पाठ्यसहगामी क्रियाओ का महत्वपूर्ण और सार्थक स्थान है। जिसके द्वारा बालक के व्यवहार करने का तरीका, सोचने का स्तर तथा सामान्य स्वभाव परिलक्षित होता है। छात्रो में पाठ्यसहगामी क्रियाओ द्वारा नियम पालन, अनुभूति और आचार संहिताओं के पालन जैसे गुण विकसित होते है। छात्र के मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास के लिए भी पाठ्यसहगामी क्रियाओ की आवश्यकता है। पाठ्यसहगामी क्रियाओ से व्यक्तित्व पक्षो का सम्पूर्ण विकास होता है जिससे छात्र कर्मठ, साहसी, सहिष्णु, सदाचारी और धैर्यवान बनता है। इस कारण पाठ्यसहगामी क्रियाओ को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है।

## अध्ययन का औचित्य

समय व समाज के अनुकूल होने पर ही शिक्षा की प्रखरता बनी रह सकती है तथा शिक्षक की ''भूमिका'' सही हो तभी अनुकूलता होगी। प्राचीन परंपराओं के चंगुल से निकलकर शिक्षण अधिगम तथा प्रशिक्षण के क्षेत्र में मनोविज्ञान की नई विधियो का प्रयोग शिक्षा में किया जा रहा है। पहले केवल ज्ञानार्जन और मानसिक विकास ही प्रमुख था लेकिन आज सर्वागीण विकास पर बल दिया जाता है। पहले शिक्षक प्रधान व निर्देशक था लेकिन आज शिक्षक की भूमिका मित्र, दार्शनिक व पथ प्रदर्शक के रूप में है। आज बालक भी निष्क्रिय श्रोता नहीं बल्कि एक क्रियाशील इकाई है।

आज शिक्षक कैसा हो ? जैसे सवाल शिक्षक की भूमिका पर उठ रहे है। नये लक्षित परिवर्तन होने से शिक्षक के सामने चुनौती खड़ी कर रहे हैं। देखना यह है कि शिक्षक किस रूप में इसे लेता है। मेरी नजरो में शिक्षक की भूमिका किसान रूप में निभाये तो आदर्श शिक्षक बन गुणात्मक सुधार ला सकता है। क्योकि अच्छी फसल तैयार करने के लिए किसान जिस तरह से बीज बोता है, नई पौध तैयार करने के लिए आवश्यकतानुसार कलमे रोपता है, कीट–पतंगो से बचाव के लिए रासायनिक छिड़काव करता है, निराई–गुराई द्वारा फालतू चीजों को उखाड़ता है और लहलहाती फसल सहर्ष समाज को सौंप देता है ठीक उसी तरह शिक्षक भी छात्रो में गुणात्मक विकास लाकर आदर्श रूप प्रस्तुत कर सकता है। विद्यालय शिक्षक की कर्मस्थली है तथा कक्षा–कक्ष से उसका कार्य प्रारंभ होता है। शिक्षक बालकों को कभी अच्छा नागरिक नहीं बना सकता यदि वह ज्ञान के विस्फोट के सामने पारस्परिक में अटका रहे। वह अपनी श्रेष्ठता तभी साबित कर सकता है जब वह नवाचारो को अपनाएँ। आज नवीनता के द्वारा शिक्षा, शिक्षण एवं शिक्षण में नवाचार की आवश्यकता द्वारा वात्यात्मकता प्रदान करने की है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी अपने समर्थन स्वरूप प्रतिवेदन में लिखा है कि –''अपेक्षित शिक्षा के पुननिर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक है, उसके व्यक्तिगत गुण उसकी शैक्षणिक योग्यताएँ उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति वह जो विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन शिक्षको पर निर्भर है जो कि उस विद्यालय में कार्यरत है।''

देश और राष्ट्र की सम्पत्ति और भावी कर्णधार छात्र–छात्राएँ ही होते है। शिक्षक पर ही इनके मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि का निर्माण और विकास का उत्तरदायित्व होता है। शिक्षक एक व्यक्ति न होकर एक संस्था होता है जो अनेक व्यक्तियो का निर्माण करने वाला है। समय–समय पर शिक्षको के व्यवसायिक उन्नयन के लिए डाईट, एस.आई.ई.आर.टी., एन.सी.ई.आर.टी. कई प्रशिक्षण आयोजन करती है।

बी.एड. माध्यमिक विद्यालयो मे पढ़ाने वाले शिक्षको के लिए प्रशिक्षण डिग्री कोर्स है। शिक्षण की तकनीकी जानकारी प्रदान करने के उद्धेश्य से शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया जाता है। छात्रो की अवस्था के अनुसार शिक्षण तकनीकी एवं दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण की अनेक संस्थाएँ है। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको के लिए ई.एल.टी. प्रशिक्षण कोर्स चलाये जात है। माध्यमिक विद्यालयो में शिक्षण कार्य के लिए विश्वविद्यालय भी तकनीकी चिन्तन प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है। जिसे शिक्षा स्नातक पाठ्यक्रम कहा जाता है और इसे उत्तीर्ण करनें पर बी.एड उपाधि प्रदान की जाती है। भावी शिक्षक (बीएड. प्रशिक्षणार्थी) के सर्वागीण विकास के लिए अध्यापक शिक्षा है जो उनकी प्रज्ञा में सुधार तथा तकनीकी क्षमताओ का विकास करती है। अतः शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए सर्वप्रथम प्रशिक्षणार्थियो के लिए श्रेष्ठ व्यावसायिक, शैक्षिक कार्यक्रमो को आरम्भ किया गया है। सार्वलौकिक और सार्वभौतिक शिक्षा का प्रचार और प्रसार के साथ मानसिक और शारीरिक आदि पक्ष भी आवश्यक है। **स्वामी विवेकानन्द के शब्दो में भी–''देश उसी अनुपात मे समुन्नत और शक्तिशाली हुआ करता है जिस अनुपात में वहाँ के जनसमूह में शिक्षा और बुद्धि का प्रसार होता है, जब तुम्हारा शरीर मजबूती से तुम्हारे पैरो पर खड़ा रहेगा तभी तुम अपने को मनुष्य अनुभव करोगे।''**

छात्रो का मानसिक और शारीरिक विकास पाठ्यसहगामी क्रियाओ के सम्पादन से होता है। खेलो से मानसिक थकान दूर होती है तथा मन भी खुश रहता है। खेलने के बादर लगने वाली भूख तथा होने वाली थकान के बाद गहरी नींद आती है। भोजन से मिलने वाले पोषण और नींद से जागने पर नई ऊर्जा स्फूर्ति के साथ उठता है।

इससे छात्र की विचार शक्ति एवं निर्णय क्षमता का विकास भी होता है तथा मानसिक तनाव में न्यूनता आती है।

प्रयोगात्मक पक्ष प्रशिक्षणार्थियो के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्वपूर्ण पक्ष है। एन.सी.ई.आर.टी. (1972) में ''टीचर एज्यूकेशन करिकुलम ए फ्रेम वर्क'' की भूमिका में भी संकेत देते हुए यह कहा गया है कि –''संक्षेप में शिक्षण विधियो को देखने पर लगता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण में चॉक और टॉक विधि के अलावा किसी विधि शाायद ही प्रयोग करता है। जिससे व्यावहारिकता का प्रभाव छोड़ने में असफल होता है। शिक्षण अभ्यास की तकनीके पाठ्यक्रम निर्माण की पूर्व निश्चित विद्या विषय वस्तु से सर्वथा निरपेक्ष रहती है अपनाई जाती है। अभ्यास–शिक्षण के लिए दो विषयो को शिक्षक–प्रशिक्षण में चयनित किया जाता है। जिसमे सभी प्रशिक्षणार्थी को 20–20 पाठ पढ़ाने होते है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक और शिक्षक छात्र तथा सामजिक और विद्यालयी पहलूओ का सैद्धान्तिक ज्ञान देते है तथा दूसरी ओर सिद्धान्तो और शिक्षण कौशलो का ज्ञान तथा अभ्यास भी छात्र अध्यापको को करवाया जाता है।

वर्तमान समय में राजस्थान में प्रत्येक वर्ष हजारो माध्यमिक प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षित होकर निकलते है। इन संस्थानो से प्रशिक्षित होकर निकलने वाले शिक्षको में शिक्षण कौशलो का कितना विकास हुआ है? शिक्षण के प्रति कितनी अन्तर्दृष्टि विकसित रही है या नहीं? शिक्षण कार्य में कितनी रूचि है। प्रशिक्षण के समय माइक्रो टीचिंग और शिक्षण अभ्यास का उन पर कितना और क्या प्रभाव पड़ता है ? शोध में शिक्षणाभ्यास के समय कक्षा–कक्ष में प्रशिक्षणार्थियों का व्यवहार उसमे निहित आत्मविश्वास से शिक्षण प्रभावशीलता का पता लगाये बगैर, हम आम शिक्षक को अच्छे प्रशिक्षणार्थियो को कैसे अलग करेंगे ?

पूर्व में किये गये शोधो का पुनरावलोकन करते समय शोधकर्त्री ने पाया कि चरो के अलग–अलग रूप जैसे–परिपक्वता, संवेगात्मकता, आत्मसम्प्रत्यय, आत्मनियंत्रण, समायोजन, नेतृत्व व्यवहार, नैतिक निर्णय, व्यक्तित्व, मूल्यो, मानसिक स्वास्थ्य, तनाव, दुश्चिन्ता निष्पति आदि लेते हुए अध्ययन किए गये है। छात्र छात्राओं से सम्बन्धित पाठ्यसामग्री क्रियाओं में भाग लेने वाले अलग चरों पर भी शोध अध्ययन किये गये है। लेकिन जयपुर के बी.एड. कॉलेज के पाठ्यसामग्री और शैक्षिक क्रियाओं में भाग लेने

और ने लेने से होने वाले मनोवैज्ञानिक गुणों का विकास उनके लिए आवश्यक है या नहीं को स्वतंत्र रूप से लेकर किया गया कोई अध्ययन प्रकाशित नहीं हुआ हैं। इन्हीं सवालो की ओर आकृष्ट हो शोधकर्ता की जिज्ञासा हुई कि इस समस्या को शोध का मुख्य विषय बनाया जाए तथा अछूते पहलु की औचित्य की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए ''जयपुर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के महिला बी.एड. कॉलेज में पाठ्यसहगामी और शैक्षिक क्रियाओं में अध्ययनरत'' अपने शोध विषय के लिए चुना है। शोधकर्त्री को विश्वास है कि  इस शोध– अध्ययन से प्राप्त परिणाम शिक्षा जगत के लिए अवश्य ही लाभप्रद सिद्ध होगा।

# सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

# (Review of Related Literature)

**शोधकर्त्री की दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता–**

सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि, सिद्धान्तों एवं निहित धारणाओ को समझने के लिए सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए सहायक होता है। इससे इस बात का पता चलता है कि किस क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए किस विधि का प्रयोग उपयुक्त और सही होगा। किन उपकरणो को प्रस्तुत किया जाए एवं किस सांख्यिकी का प्रयोग उपयुक्त होगा। अतः इन सभी तथ्यो की जानकारी सम्बन्धित साहित्य अध्ययन से मिलती है।

इस तरह साहित्य का पुनरावलोकन परिकल्पना निर्माण, साधन और सांख्यिकी तकनीकी को आधार प्रदान करता है। शोधकार्य और शोधकर्त्री के लिए आवश्यक है कि प्रस्तुत शोध साहित्य का पुनरावलोकन करे।

**भारत में किये गये सम्बन्धित चरो के अध्ययनो का पुनरावलोकन–**

1. **वाजपेयी अमीता (1991)–** ''मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम शैक्षणिक हस्तक्षेप तथा इसका नैतिक निर्णय के विकास पर प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया जिसके निष्कर्ष निम्न है :–
   (i) निर्णय क्षमता वाले कार्यक्रमों मे भाग लेने वाले बच्चे ना केवल सही और गलत निर्णय लेने में सक्षम होते है बल्कि सोद्धेश्य कार्य करने में भी सक्षम हो जाते है।
   (ii) बुद्धिमता शैक्षणिक उपलब्धि, विद्यालय समायोजन तथा परिवार की संरचना आदि पर भी नैतिक निर्णय के स्तर पर भी सार्थक सहसंबंध पाये गये है।
2. **गुप्ता के. एम. (1991)** ने– **''नैतिक निर्णय में शिक्षक अध्यापकों का स्तरीय ढाँचा''** विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि सामान्यतः शिक्षक कानून एवं व्यवसाय पर कार्य करते है। पुरूष एवं महिला शिक्षकों के प्रमुख नीतिशास्त्र विषय वस्तु में कोई अंतर नही पाया गया। मानवीय विषयों एवं विज्ञान के शिक्षकों में प्रमुखतः नीति विषय सूची में काफी अंतर था। वर्तमान व्यवसाय से 18% शिक्षक असंतुष्ट थे।

भारतीय शिक्षक अध्यापकों की प्रमुख नीति शास्त्र विषय में 30.61 थी जो विदेशी शिक्षकों से कम थी।

3. **शर्मा डी.वी. (1989) ने ''विश्वविद्यालय प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियो एवं न खेलने वालो का मनो–सामाजिक घटको का अध्ययन''** किया तथा पाया कि खेलने वालो में सांवेगिक स्थिरता पाई जाती है न खेलने वाले तथा विश्वविद्यालय प्रतिनिधित्व करने वालो के मध्य तत्परता का अन्तर होता है। न खेलने वालो की तुलना में विशेषतः क्रिकेट, फुटबॉल व हॉकी खिलाड़ियो मे, धनात्मक आत्मसम्प्रत्यय होता है। इनकी बुद्धि चर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. **गुप्ता, पूनम (1989) ने ''स्कूल स्तर के किशोर लड़के व लड़कियो की पाठ्यसहगामी क्रियाओ में संवेगात्मक स्थिरता तथा उपलब्धि स्तर का अध्ययन''** विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया जिसके परिणाम निम्न है–

   (i) लड़कियाँ लड़को की तुलना में अधिक व्यवहार कुशल थी।

   (ii) चारित्रिक विशेषता में लड़कियो मे लड़को की अपेक्षा अधिक सर्मीलापन था।

   (iii) साहसिक क्रियाओ में लड़कियो की अपेक्षा लडको में अधिक रूचि थी।

   (iv) लड़को को क्रिकेट व हॉकी में अधिक रूची थी जबकि लड़कियो को पेन्टिंग, किताबें पढ़ना, संगीत तथा साज–सज्जा में अधिक रूचि थी।
5. **पद्मश्री जे.वी. (1992) ने ''विद्यालय तंत्र में दबावपूर्ण जीवन घटनाये और बच्चों में शैक्षिक विकास''** एम.फिल. स्तर के शोधकार्य में निष्कर्ष प्राप्त किया कि–लड़को और लड़कियो में दबाव भिन्न रूप में पाया जाता है। वे कारक जिनमें सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया–लिंग और पारिवारिक सहायता, दबाव और पारिवारिक सहायता दबाव और सामान्य स्वास्थ्य दबाव और नियंत्रण बिन्दु दबाव और शैक्षिक निष्पति आदि थे। अन्य सह–सम्बन्ध सार्थक नहीं पाये गये।
6. **दुबे लक्ष्मीनारायण (1995) ने ''खिलाड़ियो के समायोजन एवं नेतृत्व गुणो का अध्ययन''** विषय पर शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि–सामूहिक खेल के खिलाड़ियो का गृह, स्वास्थ्य, संवेगात्मक और समायोजन एकल खेलो के खिलाड़ियो की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया परन्तु शैक्षिक क्षेत्र के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। कुल समायोजन की दृष्टि से सामूहिक खेलो के खिलाड़ी एकल खेलो के खिलाड़ियो से अधिक अच्छे पाये गये। सामूहिक खेलो के

खिलाडियो में एकल खिलाड़ियो की अपेक्षा खिलाड़ी भावना, जोखिम उठाने की क्षमता, उत्तरदायित्व, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प सम्बन्धी गुणो में श्रेष्ठता पायी गयी। जबकि दोनो प्रकार के खिलाड़ियो मे चरित्र एवं बौद्धिक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सामूहिक खेलो के खिलाड़ी एकल खेलो के खिलाड़ियो की अपेक्षा उत्तम पाये गये।

7. **नारायण (1997)** के अनुसार भारत के उपराष्ट्रपति ने बताया कि खेलो की आवश्यकता स्वास्थ्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है अतः खेल से स्वास्थ्य की रक्षा करना, इस विषय को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। खेलो का आधुनिकीकरण सामूहिक प्रयास से एवं उत्साहवर्धन से खेल भावना का विकास किया जा सकता है। अतः यह विषय अति महत्वपूर्ण है।
8. **सिंह (1997)** ने दिल्ली में जातीय आधारित शोधकार्य किया जिसमे पाया कि अन्य जातियो के सापेक्ष जाट लड़को मे खेल भावना उच्च स्तर की पायी जाती है और उनका शरीर, उनकी भावना के अनुरूप विकास करता है और शारीरिक संगठन इस प्रकार का बन जाता है कि वे खेलो में अधिक दक्षता प्राप्त करते है।
9. **मिश्रा के.एन. पण्डा व के.सी. (1997) ने–''अध्यापको के व्यक्तित्व दबाव की भावनाओं एवं थकान पर शिक्षक प्रशिक्षण का प्रभाव''** नामक शीर्षक पर स्वतंत्र अध्ययन किया व अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होने पाया कि (1) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यक्तित्व विकास, थकान की भावना से बचने का एक घटक हो सकता है। (2) अध्यापको के व्यक्तित्व, संवेगात्मक थकान तथा वैयक्तिक सिद्धि के माले में सार्थक अन्तर पाया गया, परंतु अध्यापको की दबाव की भावना तथा थकान की भावना में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं पाया गया।
10. **वाजपेयी, अनिता (1999) ने ''विद्यार्थियो के नैतिक विकास मे नैतिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन।''** विषय पर शोधकार्य कर बताया कि जिन विद्यार्थियो ने नैतिक शिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया इन्होने सही या गलत जानने की उचित योग्यता प्राप्त की तथा परिस्थितियो को समझने का प्रयास किया। बुद्धिमता, शैक्षणिक उपलब्धि, विद्यालय समायोजन और पारिवारिक संरचना को नैतिक मूल्यो व नैतिक निर्णय के स्तर से महत्वपूर्ण रूप से सम्बन्धित पाया गया।

11. **शर्मा एवं गौतम (2000) के अध्ययन के अनुसार** सरकार की नई खेल नीति उस अन्तिम खिलाड़ी के लिए लाभकर सिद्ध होती है चाहे वह खिलाडी पुरूष हो या स्त्री हो दोनो में इससे खेल भावना का विकास हो सकेगा और देश को अच्छे खिलाड़ी मिलेंगे।

12. **भारती, टी अरूणा एवं रेड्डी, वी वाणी (2002) ने ''प्राथमिक विद्यालयो के अध्यापको के कार्य दबाव के स्त्रोत''** नामक शीर्षक पर अध्ययन के निष्कर्ष पर उन्होने पाया कि

(1) समय की मांग, कार्य सुरक्षा के क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयो की अध्यापिकाओ को दबाव का अनुभव करता हुआ पाया गया। जबकि सरकारी स्कूलो की अध्यापिकाओ को कार्यभार समय की मांग तथा कार्यशील वातावरण के क्षेत्र में कम दबाव अनुभव करता हुआ पाया गया।

(2) सरकारी स्कूलो की अध्यापिकाओ को स्टाफ सम्बन्ध तथा कार्य सुरक्षा के क्षेत्रो मे कम दबाव अनुभव करते हुये पाया गया क्योकि उनकी नौकरी स्थायी थी।

(3) छात्र पाठ्यक्रमानुसार कार्यकारी वातावरण समय की मांग प्रशासनिक समस्याओ के संदर्भ में सरकारी स्कूलो की शिक्षिकाओ को ज्यादा दबाव महसूस करते हुए पाया गया।

(4) अध्यापको के दबाव पर आयु, शैक्षणिक योग्यता और अध्यापन अनुभव का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। 74 शिक्षिकाएँ अपने कार्य में सक्रिय पायी गयी तथा दबाव का सामना करने के उपाय के रूप में सामान्य लक्ष्य के लिए एक साथ कार्य करते हुए पायी गयी।

13. **दोसी, डॉ. प्रवीण (2002) ने–''जनजाति विद्यार्थियो में पाठ्यसहगामी क्रियाओ द्वारा मुख्य पोषण की स्थिति का अध्ययन''** किया। इन्होने पाया कि मुख्य रूप से विभिन्न मूल्य पोषण के निम्न सह–शैक्षिक प्रवृतियो का आयोजन होता है। इन प्रवृतियो के प्रभारी पाये जाते है जो वर्षभर कार्य करते है। प्रार्थना, साहित्यिक कार्यक्रमो का आयोजन, खेलकूद, श्रमदान, शैक्षिक भ्रमण, समाजोपयोगी कार्य, आनतरिक मूल्यांकन, विद्यालयी सौन्दर्यकरण, छात्र कल्याण परिषद, स्काउट एन.सी.सी., वाचनालय व पुस्तकालय प्रायोगिक कार्य, विषय परिषद, सर्वधर्म सदभाव आयोजन राष्ट्रीय पर्व मनाना प्रेरक प्रसंग आदि। इनमे प्रार्थना साहित्यिक कार्यक्रमो का

आयोजन, खेलकूद, श्रमदान, शैक्षिक भ्रमण, समाजोपयोगी कार्य, राष्ट्रीय पर्व मनाना आदि कार्यक्रम बहुतायत से किये जाते हैं। कार्यक्रम के आयोजन में वित्तीय कठिनाईयाँ महसूस की गई। राजकीय विद्यालयो की अपेक्षा निजी विद्यालयो में सह–शैक्षिक प्रवृतियो की स्थिति ठीक पाई गई। विद्यालयो मे वाचनालयो व पुस्तकालयो का अभाव पाया गया। समानता के मूल्य के पोषण हेतु श्रमदान, स्वतंत्रता व सार्वजनिक सम्पत्ति सुरक्षा मूल्य पोषण हेतु भ्रमण व समाजोपयोगी उत्पादक कार्यो को माना गया। सांस्कृतिक संध्या, नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता, मानव अधिकारो की रक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमो को बहुत कम आयोजित किये जाते है।

14. **दूबे, चन्दभावेश (2003) ने ''मानवीय मूल्यो व सामाजिक विकास हेतु शिक्षण तथा शिक्षण व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है''** विषय पर पी.एच.डी. शोध कार्य में निष्कर्ष पाया कि शिक्षण में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षो के सभी वर्गो का शिक्षण किया जाये अर्थात व्यवहार केन्द्रित शिक्षण हो जिसके मूल्यांकन से पता चला कि इस प्रकार के शिक्षण से मानवीय मूल्यो मे वृद्धि होती है।
15. **दवे पी.एन.(2005) ने ''भारत में शैक्षिक नेतृत्व का अपहरण''** शोध कार्य में निम्न निष्कर्ष पाया कि लोगो में यह मानसिकता व्यवस्था के विपरीत है कि प्राथमिक विद्यालय का अध्यापक बनने के लिए योग्यता प्रमाण–पत्र की आवश्यकता होती है जबकि एक नेतृत्व करने वाले कुलपति के लिए किसी प्रकार की योग्यता की आवश्यकता नहीं होती।
16. **श्यामला, मुथु, सुब्रहमणीज रेड्डी लोकनाथ (2006)** ने पी.एच.डी. उपरान्त पुनः शोधकार्य करते हुए बताया कि वर्तमान विद्यालय मांग के अनुसार शैक्षिक नेता को निदेशनात्मक तथा सामुदायिक नेता के रूप होना आवश्यक बताया गया है। नेतृत्व के सिद्धान्तो में संस्थागत संगठन की मांग के अनुसार उत्तम निदेशन तथा उत्तम अधिगम प्रदान करने का दायित्व नेता का होता है, वे सभी जानकारियाँ रखते है। नैतिक मूल्य विकास हेतु कुशल शैक्षिक नेतृत्व प्रदान करने वाले अभिभावको को भी उनके बच्चो की शिक्षा में शामिल करने का उत्तरदायित्व भी इन्ही का होता है।
17. **कुमार श्रवण (2007) ने ''लैंगिक भिन्नता के सन्दर्भ में बच्चों की खेल की उपलब्धियाँ और उनके माता–पिता की खेल भावनाओ के सम्बन्ध''** में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाते हुए 100 विद्यार्थियो को आनुपातिक यादृच्छिक न्यादर्श

विधि से चयनित कर निष्कर्ष स्थापित किया कि बालिकाओ की खेल की उपलब्धि और उनके माता–पिता की खेल भावनाओ के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार बालको की खेल उपलब्धि तथा उनके माता–पिता की खेल भावना में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।''

18. **कुमार सज्जन (2009)** ने – ''पाठ्य सहगामी क्रियाओ में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियो की संवेगात्मक परिपक्वता व मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होने पाया कि विद्यार्थियो की आवश्यकता की पूर्ति में पाठ्यसहगामी क्रियाओ की विशेष भूमिका है। विद्यालयो मे खेल, अभिनय, वाद–विवाद एन.एस.एस., एन.सी.सी., विद्यालय पत्रिका, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अभिभावक दिवस, पुस्तकालय कार्य आदि पाट्य सहगामी क्रियाओ में छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से रूचि रखते है।''

19. **शुक्ला राजवीर (2011) – ''माध्यमिक विद्यालयो के खेल में भाग लेने एवं भाग नहीं लेने वाले विद्यार्थियो के व्यक्तित्व एवं खेल भावना का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर शोध कार्य किया। इससे इन्होने यह निष्कर्ष निकाला कि खेलो में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वालो के व्यक्तित्व गुणो में अन्तर होता है। खेल में भाग लेने वालो समायोजनशील, सामाजिक रूप से श्रेष्ठ होते है। छात्रो की अपेक्षा छात्राओ में खेल भावना अधिक पाई गई।

20. **रामावतार (2014) ने ''विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानो में कार्यरत शिक्षको के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य मे पाया कि राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षको ने व्यक्तित्व के **''आत्म सम्प्रत्यय, मिजाज एवं समायोजन''** आयामो पर अधिक बल दिया जबकि विधि महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षको ने **''अर्न्तमुखी–बर्हिमुखी आत्मनिर्भरता एवं दुश्चिन्ता''** आयाम पर अधिक बल दिया। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण एवं विधि महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षको के व्यक्तित्व का स्तर लगभग समान होता है।

## विदेशो में पूर्व मे किये गये अध्ययनो का पुनरावलोकन

1. **जैमन, जी.एच. (1982)** ने प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत विद्यार्थियो मे सामाजिक, धार्मिक व नैतिक मूल्यो का पता लगाने हेतु **''विद्यार्थियो के नैतिक चरित्र व व्यक्तित्व समायोजन में सम्बन्ध''** विषय पर इस शोधकार्य में निष्कर्ष मे पाया कि शहरी व ग्रामीण दोनो प्रकार के विद्यार्थियो में धार्मिक मूल्य प्रबल पाये जाते है। विद्यार्थियो के नैतिक चरित्र व व्यक्तित्व समायोजन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। छात्रो की तुलना में छात्राओ का नैतिक चरित्र उच्च पाया गया।
2. **बुकस, बारबरा जीन (1996) ने ''मार्केटिंग शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय छात्रो के नैतिक निर्णय का अध्ययन''** शीर्षक पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य कर निष्कर्ष रूप में पाया कि मार्केटिंग शिक्षा के विद्यार्थियो में हाईस्कूल तक नैतिक निर्णय का स्तर उनके विषय से सम्बन्धित संगठनात्मक सह सम्बन्धो से प्रभावित होता है। अध्यापक तथा पाठ्यक्रम विकास एवं भविष्य की खोजी जिज्ञासाएँ उनके नैतिक निर्णयो को मजबूत बनाती है।
3. **ब्रिम्स कैरी लेन (1996) ने दक्षिण कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के तत्वाधान में ''विद्यालय के पुनसंगठन मे नेतृत्व''** शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन किया तथा पाया कि विभिन्न स्तरो पर प्रधानाध्यापक, अध्यापक व अन्य निर्णय निर्माण समूह नेतृत्व प्रक्रिया में सम्मिलित थे। उनकी नेतृत्व में संलग्नता अवसर पर एवं उनकी क्षमता पर निभर पायी गई। प्रारम्भिक स्तर के विद्यालय मे साझा व बहुआयामी नेतृत्व में भेद पाया गया जबकि यह विभेद माध्यमिक विद्यालय में नहीं पाया गया।
4. **डेविस, एन.पी. (1986) ने ''दो भिन्न–भिन्न संस्कृतियो के प्रबन्ध स्नातको एवं स्नातक के विद्यार्थियो के नैतिक निर्णयो के विकास का तुलनात्मक अध्ययन''** शीर्षक पर अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि भिन्न–भिन्न संस्कृति के छात्रो में नैतिक निर्णय क्षमता एवं लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर है, किन्तु इन दोनो संस्कृतियों में इन कारको की अन्तःक्रिया का उनके नैतिक स्तर पर प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
5. **डियाने, डी.हॉरगेन (1996) ने विद्यार्थियो को मूल्यो से सम्बन्धित पढ़ाई जाने वाली प्रवेशिकाओ का तुलनात्मक अध्ययन''** शीर्षक से सम्बन्धित शोध कार्य किया था। इस अध्ययन में चीन व अमेरिका के महाविद्यालय तक सीमित रख किया और पाया

कि चीनी विद्यार्थी मूल्यो के प्रति ज्यादा सजग थे। जबकि अमेरिकी विद्यार्थियो की सोच उन घटनाओ और चरित्रो पर ज्यादा थी जो उन्हे अपनी पसंदीदा पाठ्यसामग्री को पढ़ने का आनन्द देती थी। फिर भी दोनो देशो के विद्यार्थियो ने मूल्यो को आत्मसात किया, जिनमे ईमानदारी, कठिन परिश्रम, उपलब्धि आदि प्रमुख थे।

6. **मार्टिन एलन कॉवे (1996) ने मिशिगन विश्वविद्यालय के तत्वाधान में ''नेतृत्व की समझ, समूह कार्य व विभिन्न धार्मिक संस्थानो द्वारा विभिन्न सामुदायिक गठबन्धनो मे सहभागिता, जो कि बच्चो, युवाओ व परिवारो का समर्थन करती हो।''** शीर्षक के अन्तर्गत किया। हालांकि सामुदायिक गठबंधनो में धार्मिक संस्थाओ की सहभागिता धार्मिक संगठन के आधार व भौगोलिक स्थिति से सम्बन्धित नहीं पाई गई पर अधिकतर धार्मिक संगठनो की सामुदायिक संगठनो में सहभागिता पायी गई। धार्मिक संगठन की सामुदायिक गठबंधनो में सहभागिता नेतृत्व समूह से भी सम्बन्धित नहीं पाई गई।
7. **जॉन्स, जीन एलेन (1997) ने ''खिलाड़ियो की निसंपादन क्षमता में आत्मविश्वास की भूमिका अध्ययन''** शीर्षक पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि निम्न आत्मविश्वास एवं खेल प्रदर्शन में सार्थक सम्बन्ध पाये जाते है। जिन खिलाड़ियो का आत्मविश्वास निम्न था उनकी खेल निष्पादन क्षमता भी निम्न पाई गई। इसके विपरीत उच्च आत्मविश्वास वाले खिलाड़ियो की उपलब्धियां भी उच्च स्तर की पायी गई।
8. **कॉलटन्टर जेल.एन. (1997) ने ''अध्यापको की सीखने की क्षमता तथा उनके विशिष्ट व्यवहारो की कक्षा के अन्दर व कक्षा के बाहर मिलने वाले पृष्ठ–पोषणो के आधार पर उनकी प्रभावशीलता का परीक्षण''** शीर्षक पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि जिन अध्यापको में सीखने का भाव अधिक था। उनका व्यवहार छात्रो के साथ सम्यक दिशा में था तथा उनके सम्बन्ध में सार्थक व सकारात्मक व प्रभावशाली शिक्षक के रूप मे कक्षा के अन्दर व बाहर समान पृष्ठ–पोषण प्राप्त हुए।
9. **केरोलाइन जोइस किलमेन (1997) ने सेंट लुईस विश्वविद्यालय के तत्वाधान में ''कुछ महत्वपूर्ण लक्षणो के प्रति प्रधानाध्यापको व अध्यापको का शोध'' नामक**

**शीर्षक के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य सम्पन्न कर बताया कि दो नेतृत्व लक्षण महत्वपूर्ण रूप से जाति या कुल से प्रभावित पाए गए जो कि राजनैतिक दक्षता व समूह का निर्माण करते थे। पढने लिखने, उम्र व वर्ग की अपेक्षा लिंग व पद अधिक प्रभावित पाए गए। सर्वेक्षण के प्रति प्रतिकिया उम्र व वर्ग की अपेक्षा लिंग से अधिक प्रभावित पाई गई। प्रधानाध्यापक की राजनीतिक दक्षता व संगठनात्मक क्षमता अध्यापको की अपेक्षा अधिक पाई गई।**

10. **श्रीवास्तव एस.एस एवं वर्मा डी.पी. (1999) ने–''योग शिक्षा का विद्यार्थियो पर प्रभावः एक प्रयोगात्मक अध्ययन''** शीर्षक पर स्वतंत्र अध्ययन किये। इस अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–
    1. योगाभ्यास करने वाले समूह के वक्ष विस्तार में योगाभ्यास नही करने वाले समूह की तुलना में लगभग 3 सेमी की वृद्धि हुई जबकि अभ्यास नहीं करने वालो मे कोई अन्तर दृष्टिगत नहीं हुआ।
    2. लम्बाई की दृष्टि से योगाभ्यासी समूह में 2.7 सेमी की सराहनीय वृद्धि हुई। जो नियंत्रित समूह की वृद्धि की तुलना में तीन गुना थी।
    3. शारीरिक भार योगाभ्यास समूह में औसतन केवल 200 ग्राम भार बढ़ा जबकि अनाभ्यासी समूह में 1080 ग्राम वृद्धि हुआ।
    4. कलाई की दाब शक्ति में योगाभ्यासी समूह में 2.79 किलोग्राम की वृद्धि हुई जबकि अनाभ्यासी समूह में केवल 0.40 किलोग्राम पाई गई।
11. **बहल, ज्योति (2001) ने ''कामकाजी महिलाओ के मानसिक स्वास्थ्य में पारिवारिक तनाव की भूमिका का अध्ययन''** शीर्षक पर शोध कार्य करते हुए पाया कि –
    1. कामकाजी महिलाओ में पारिवारिक समायोजन में असफलता के कारण तनाव उत्पन्न होना पाया।
    2. कामकाजी महिलाओ में कार्य स्थल की दूरी तथा कार्यस्थल पर उनका उत्पीड़न का दाम्पत्य जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया।
    3. कामकाजी महिलाओ में बच्चो की चिन्ता उन्हे मानसिक तनाव के दायरे में लाया गया।
12. **रोनाल्ड ई.गोलसन (2002) ने ''विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि आकांक्षा स्तर व पाठ्य सहगामी गतिविधियो मे सहभागिता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन''** शीर्षक पर

पी.एच.डी. शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च स्तर वाले विद्यार्थियो का उपलब्धि प्राप्तांक उच्च स्तर का पाया गया। उच्च आकांक्षा स्तर वाले विद्यार्थियो की पाठ्य सहगामी गतिविधियो में सहभागिता उच्च स्तर की पाई गई ।

13. **सू हू सोनिया (2008)** ने अमेरिका मे यह अध्ययन चियर लीड्र्स पर किया गया जो 10 से 17 वर्ष उम्र की थी। 26 में से 14 किशोरिया शारीरिक रूप से अच्छी प्रस्तुतियाँ दे पायी जिनका शरीर देखने में छरहरा था और लोचशीलता उच्च स्तर की थी। इसके साथ उनके खेल भावना परीक्षण मे भी उच्च स्तर पाया गया। उनकी खेल के प्रति, शरीर के प्रति, खेल पर्यावरण के प्रति व सामाजिक स्तर के विभेदीकरण में विशिष्टता पायी गयी। अच्छी चीयर लीडर के परिवार में खेल प्रेमी लोग अधिक पाये गये।
14. **स्पीण्डा जॉन.एस.डब्ल्यू. (2009)** इस अध्ययन को नेशनल फुटबॉल लीग (NFL) के फैन जिसमे उनकी संख्या N=417 ली गई। इसमे प्रथम व तृतीय सदस्य जो खिलाड़ी थे उन पर दर्शको की खेल भावना को मापा गया। जिसमे पाया गया कि यह दर्शक प्रथम खिलाड़ी के साथ धनात्मक रूप से भावनात्मक जुडाव रखते है जबकि उस खिलाडी की जगह तीसरा खिलाडी अगर लेता है तो उसके साथ दर्शकों की भावनाएँ ऋणात्मक होती चली जाती है। इसके बावजूद भी दर्शक मैच के परिणाम पर कोंई असर नही चाहते जबकि भावनाओ में अन्तर परिलक्षित होता है।
15. **ऑलिम अक्कस (2010)** ने शिक्षक उद्विग्नता स्तर और उनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति उच्च अभिवृत्ति पाई गई उनकी उद्विग्नता का स्तर निम्न पाया गया। शिक्षकों की उद्विग्नता स्तर एंव शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया ।
16. **एडवर्ड ए. (2011)** ने ''बास्केट बॉल व फुटबॉल के खिलाडियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक से यह पाया गया कि बास्केट बॉल खिलाडी अपने मित्रो व टीम के साथ अधिक सहयोगी होते है तथा फुटबॉल खिलाडी अपने मित्रो व टीम के साथ आलोचनात्मक व अलगाववादी व्यवहार वाले होते है। बास्केट बॉल के

खिलाडी बहुमुखी व्यक्तित्व तथा फुटबॉल के खिलाडी अर्न्तमुखी व्यक्तित्व वाले होते है।

17. **हुसैन लियाकत एंव अन्य (2011)** ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको की व्यवसायिक अभिवृत्ति का शिक्षण व्यवहार के साथ सम्बन्ध ''शीर्षक पर गोमाल विश्वविद्यालय के पीके पाकिस्तान से प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया और निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों की अभिवृत्ति एंव उनके शिक्षण व्यवहार मे उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
18. **जिबदार जिनाब एंव अन्य (2012)** ने ''बेंडमिंटन के महिला एंव पुरूष खिलाडियों की मानसिक ईमेजरी योग्यता का अध्ययन ''शीर्षक इस्लामिक आजद विश्वविद्यालय ईरान से प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि बाह्य एंव आन्तरिक मानसिक ईमेजरी योग्यता में महिला एंव पुरूष बेडमिंटन खिलाडियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।
19. **ऐव, पिर्यस एंव अन्य (2013)** ने ''सेंन्ट फ्रांसिस ब्रादर्स स्कूल के नवागुन्तको के अध्ययन स्तर एंव मानसिक योग्यता के साथ शैक्षिक का सम्बन्ध शीर्षक पर प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया और निष्कर्ष मे पाया कि नवागन्तुको की शैक्षिक सफलता उनकी अध्ययन आदतो एंव मानसिक योग्यता पर निर्भर रहती है विद्यालय के पाठ्यक्रम का इसमे कोई सार्थक योग्यदान नही है। मानसिक योग्यता एंव शैक्षिक सफलता में सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है।

**20. <u>निष्कर्ष–</u>**

नये ज्ञान का पथ–प्रदर्शन हमेशा ज्ञान का पुनरावलोकन व अध्ययन करता है। प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में साहित्य की समीक्षा व अध्ययन एक महत्वपूर्ण कदम है। सत्य तो अन्नत है अतः किसी समस्या पर कितना काम हुआ है यह एक तरफ तो निर्देश है दूसरी तरफ संदेश भी है कि बहुत–सा काम बाकी है। भूतकाल मे हुए कार्य वर्तमान तथा भविष्य के कार्यो के श्रेष्ठ निर्देशन तत्व तथा सीखने एंव खोज के आधार होते है। अनुसंधान विषय के जिन चरों पर भारत मे अध्ययन किये गये उनकी तीन दशाएँ थी

1. ऐसे चरो को स्वीकारना जो पत्र/शिक्षक/पाठ्यक्रम/ शिक्षण विधि अर्थात् जो औपचारिक या विद्यालयी शिक्षा को प्रभावित कर रहे थे।

2. व्यवस्था, प्रबंधन, प्रशासन, निर्देशन, मूल्यांकन, परीक्षण विकास एवं समस्याओ से जुड़े चरो को स्वीकार करना था।
3. ऐसे चरो को स्वीकारना जिसमे विचार को शिक्षाविदो, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञो आदि द्वारा समय–समय पर दिये गये दर्शन से शिक्षा में परिवर्तन अपेक्षित रहा ।

इन्ही तीनो दृष्टियो को ध्यान मे रखकर शोधकर्त्री द्वारा मुख्य रूप से एम.बी. बुच द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किये गये शोधकार्यो को इसमे समाहित किया गया है। इसके साथ पत्र–पत्रिकाओ एंव शोधग्रन्थों से भी प्रेरणा लेने का प्रयास किया गया। इस प्रबन्ध में आंकडो के रूप मे विश्लेषण का विषय बनाया अतः विविध चरो पर किये गये अध्ययनो को देखने का प्रयास किया गया है।

विदेशों मे शोध कार्य अलग प्रकृति का होता है। अधिकतर शोध एक चर को लेकर किये जाते है और उनका शोध आकल्प अधिकतर प्रयोगात्मक होता है। शिक्षा को चलने वाली प्रकिया माना जाता है जब कृत्रिमता की अधिक सम्भावना होती है। शोधकर्त्री ने शोध मे विदेशी अध्ययनों को भी शामिल करने का प्रयास किया है।

भारत और विदेशो में पूर्व किये गये शिक्षा के क्षेत्र मे निम्न शोधकार्यो की समीक्षा कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि पाठ्यसहगामी क्रियाओं और शैक्षिक क्रियाओ को एक साथ लेकर बी.एड. कॉलेजो हेतु शोधकार्य जयपुर जिले के महिला बी.एड़ कॉलेज में किया जाए। अतः जिज्ञासावश शोधकर्त्री ने इस समस्या को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया। इसलिए शोधकर्त्री द्वारा ''जयपुर के ग्रामीण एवं शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो में पाठ्यसहगामी और शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन'' नामक शीर्षक को अपने शोधकार्य हेतु चुना है।

## समस्या कथन

**''जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो में पाठ्य सहगामी और शैक्षिक क्रियाओं का अध्ययन''**

## शोध का उद्धेश्य

किसी भी कार्य को करने के लिए लक्ष्य का निर्धारण करना आवश्यक है। क्योकि लक्ष्य ही किसी कार्य को दिशा और गति प्रदान करता है। अनुसंधान प्रक्रियाम ें उद्धेश्यो का निर्धारण न एक प्राकृत क्रिया है बल्कि वैज्ञानिक एवं आवश्यक चरण है। समग्रता प्रदान करने की दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्धेश्य निर्धारित किए है।

1. जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की पाठ्यसहगामी क्रियाओ का अध्ययन करना।
   (i) जयपुर के ग्रामीण बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की पाठ्यसहगामी क्रियाओ का अध्ययन करना।
   (ii) जयपुर के शहरी बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की पाठ्यसहगामी क्रियाओ का अध्ययन करना।
2. जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन करना।
   (i) जयपुर के ग्रामीण बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन करना।
   (ii) जयपुर के शहरी बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको की शैक्षिक क्रियाओ का अध्ययन करना।

## अध्ययन की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना को अंग्रेजी में हाइपोथीसिस कहते है जिसका अर्थ होता है समस्या का समाधान। हाइपोथीसिस दो शब्दो से मिलकर बना है हाइपो और थीसिस। हाइपोथीसिस – हाइपो + थीसिस

अतः परिकल्पना शब्द का अर्थ अपकथन से है जो समस्या के समाधान की अवधारणा होती है जिसकी पुष्टि का प्रयास शोधकर्ता करता है। शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ परिकल्पनाओं का निर्धारण।

बेकन के विश्वासानुसार ''जैसे ही समस्या की जानकारी हो जाए फलन उद्धेश्य स्पष्ट हो जाए वैसे ही इसकी परिकल्पना का निर्धारण हो जाना चाहिए।'' परिकल्पना निर्माण संज्ञानपूर्ण एवं विवेक पूर्ण प्रक्रिया है क्योकि बिना विचारो वाली कल्पना व्यर्थ होती है। अतः समस्या का गहन विश्लेषण कर परिकल्पनाओ का निर्धारण एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह सत्य है कि बिना परिकल्पनाओ के न तो कोई प्रयोग हो सकता है न ही कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान। अतः परिकल्पना एक सहारा या दृष्टि है जो भावी समाधान का अनुमानित स्वरूप है।

बैली के अनुसार **''परिकल्पना एक ऐसी प्रस्तावना है जिसे परीक्षण के लिए रखा जाता है।''**

डोब्रिनर के अनुसार **''परिकल्पनाएँ ऐसे अनुमान है जो यह बताता है कि विभिन्न तत्व किस प्रकार अन्तः संबंधित है।''**

बोगार्डस के अनुसार **''परिकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत वह प्रस्तावना है जिसका निर्माण शोध या अनुसंधान का आधार होता है।''**

बेन्डेलन के अनुसार **''परिकल्पना एक शक्तिशाली वायुयानो के मार्ग निर्देशन करने वाले प्रकाशपुंज की भांति है जो शोधकर्ताओ का पथ प्रदर्शन करती है।**''

निम्न महत्वपूर्ण दृष्टिकोण को देखते हुए शोधकर्त्री ने अध्ययन को ध्यान में रखकर निम्न परिकल्पनाएँ निश्चित की है–

(1) जयपुर के ग्रामीण महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको के पाठ्य सहगामी क्रियाओ का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

(2) जयपुर के शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको के पाठ्य सहगामी क्रियाओ का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

(3) जयपुर के ग्रामीण महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको के शैक्षिक क्रियाओ का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

(4) जयपुर के शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के शिक्षको के शैक्षिक क्रियाओ का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

**प्रस्तुत अध्ययन का परिसीमन**

1. इस शोधकार्य को जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड कॉलेजो तक ही सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में 600 प्रशिक्षणार्थी (300 ग्रामीण तथा 300 शहरी) तथा 50 शिक्षक (25 ग्रामीण एवं 25 शहरी तक ही सीमित किया गया है।

## शोध विधि एवं प्रक्रिया

## (Research Method and Procedure)

**शोध का स्वरूप एवं शोध विधि**

सामान्य सर्वेक्षण हो या विवरणात्मक, शोधकर्त्री का पहला काम है कि वह अधिक प्रबल नियन्त्रण व वस्तुपरक विधि प्रयोग में ला सके। अध्ययन और विवरणात्मक सर्वेक्षण मानव व्यवहार से सम्बन्धित बहुमूल्य ज्ञान का सीधा साधन एवं स्त्रोत है।

प्रस्तुत अध्ययन एवं विवरणात्मक शोध जिसमे जयपुर के बी.एड. कॉलेजो के पाठ्यसहगामी एवं शैक्षिक क्रियाओ का पता लगाने का प्रयास किया गया है। **जान–डब्ल्यू वेस्ट के शब्दो में ''विवरणात्मक शोध वर्तमान स्थिति की व्याख्या और विवेचन दोनो प्रस्तुत करता है।''** इनका सम्बन्ध उन स्थितियो और सम्बन्धो से है जिनका अस्तित्व वर्तमान में है अथवा उन व्यवहारो मे है जो कि प्रचलित है और उन दृष्टिकोणो और अभिवृतियो से है जिसका प्रचलन ऐसे सक्रिय प्रक्रमो से तथा अनुभव किये जा रहे प्रभावो से है या विकासशील उपनतियो से है।

अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण शोध विधि को चयनित किया है। इससे सम्बन्धित व्याख्या प्रो.सच्चिदानंद ढीडियाल के अनुसार– ''जिन शोधकर्ताओ को सूचनाओ का संकलन, किसी समस्या विशेष कारको का पता लगाना है या फिर किसी व्यवहार अथवा घटना का पूर्वानुमान लगाना है, या दो चरो के बीच के सम्बन्धो का पता लगाना है तो उनके लिए सर्वेक्षण विधि से कोई श्रेष्ठ विधि नहीं होगी।

**मौस के अनुसार – ''सर्वेक्षण एक विशेष सामाजिक स्थिति, समस्या या समष्टि से सम्बन्धित उद्धेश्य के हेतु व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विश्लेषण की एक विधि होता है।''**

निम्न परिभाषाओ से यह स्पष्ट होता है कि इस तरह शोध का आधार सम्बन्धित का प्रतिदर्श होता है और प्रतिदर्श का आधार प्रसम्भाव्य सिद्धान्त तथा यादृच्छिक प्रतिचयन होता है। इस तरह शोध की वैज्ञानिक प्रकृति की अभिव्यक्ति अध्ययन किये जाने वाले समाज विज्ञानी तथ्यो, मतो व अभिवृतियो से स्पष्ट होती है। सभी स्थितियो, शोध शीर्षक, उसकी प्रकृति एवं शोध के लिए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण शोध विधि का चयन किया है।

**न्यादर्श पूर्ण समष्टि का अध्ययन**

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के 600 प्रशिक्षणार्थी एवं 50 अध्यापको को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। न्यायदर्श के रूप में प्रशिक्षणार्थियो एवं अध्यापको का चयन निम्न है –

| प्रशिक्षणार्थी | ग्रामीण | शहरी | कुल |
|---|---|---|---|
| | 300 | 300 | 600 |
| अध्यापक | ग्रामीण | शहरी | कुल |
| | 25 | 25 | 50 |

**न्यादर्श चयन विधि –**

न्यादर्श में प्रतिनिधित्व और पर्याप्ता के कारण विशिष्ट न्यादर्श चयन के द्वारा होना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा इस विधि द्वारा जयपुर के ग्रामीण और शहरी महिला बी.एड. कॉलेजो के 600 प्रशिक्षणार्थियों एवं 50 शिक्षको को न्यादर्श के रूप में चुना जायेगा।

**प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –**

| उपकरण का नाम | निर्माणकर्ता का नाम |
|---|---|
| बी.एड. कॉलेजो की पाठ्य सहगामी क्रियाएँ मापनी | स्वनिर्मित मापनी |
| बी.एड. कॉलेजो के शैक्षिक क्रियाएँ मापनी | स्वनिर्मित मापनी |

**सम्पूर्ण शोध का विवरण –**

| | | |
|---|---|---|
| अध्याय – 1 | – | प्रस्तावना, अध्ययन का ओचित्य अध्ययन की आवश्यकता, अध्ययन का उद्धेश्य, अध्ययन की परिकल्पनाएँ, अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन |
| अध्याय – 2 | – | शोध से सम्बन्धित साहित्य समीक्षा |
| अध्याय – 3 | – | शोध की विधि एवं प्रक्रिया प्रयुक्त उपकरण। |
| अध्याय – 4 | – | सारणीयन एवं दत्त विश्लेषण |
| अध्याय – 5 | – | परिणाम, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव |

अतः शोधकर्त्री ने अपने संपूर्ण शोध विषय को इन 5 अध्यायो में समाहित करने की चेष्टा की है। किसी कार्य को सुचारू और नियमित तरीके से करने के लिए कार्य को छोटे–छोटे भागो में बांट कर किया जाने से उस कार्य की सफलता को सुदृढ करते है। अतः शोधकर्त्री ने अपने शोध विषय की सफलता हेतु अपने शोध को इन 5 अध्यायो में बांटा है।

**संदर्भ सूची –**


1. त्रिपाठी, डा. कुमुद (2001), ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक अध्ययन पर शोध
2. श्रीवास्तव, आर.के. (2001), ''प्रधानाध्यापको के निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे अध्यापको की प्रत्यक्ष बोध की भूमिका
3. पाण्डे, राकेश तथा त्रिपाठी सीमा (2002)– ''कार्य दबाव शिथिल सम्बन्ध मे सामाजिक समर्थन की भूमिका'' विषय पर शोध
4. प्रकाश जी.पी. माथुर, पूर्णिमा तथा अग्रवाल, रानी (2002) ''विश्वविद्यालय शिक्षको मे अनुभूत भूमिका दबाव का सामना करने वाली रणनीति लिंग तथा अध्यापन अनुभव का प्रभाव'' पर स्वतंत्र अध्ययन।
5. शर्मा, अरविन्द (2002) ''प्राथमिक विद्यालयो के अध्यापको के कार्य दबाव के स्त्रोत' पर स्वतंत्र अध्ययन
6. भारती, टी. अरूणा और रेड्डी, एन.वी. वानि (2002) प्राथमिक विद्यालय के अध्यापको मे कार्य तनाव के स्त्रोत का अध्ययन''
7. राउत, सुशान्त कुमार (2002) ने ''मानसिक स्वास्थ्य, संगठनात्मक वातावरण तथा छात्र उपलब्धि के संदर्भ में स्वायत्तशासी तथा गैर स्वायत्तशासी महाविद्यालयो के शिक्षको की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन''
8. उपाध्याय, एस.आर. (2003)–''उच्च तनावग्रस्त लड़कियो के गृह वातावरण मे बचाव के सम्बन्ध में उनके मूल्यो का अध्ययन।
9. आनन्द सरोज (2003) – ''लखनऊ शहर के माध्यमिक विद्यार्थियो के सामाजिक दबाव और विद्यालयी उपलब्धि का अध्ययन'' विषय पर पी.एच.डी.
10. पुरूष सिंह, एच (2003) – ''पुरूष एवं महिला शिक्षको के मध्य इनकी व्यक्तिगत सम्बन्धी आवश्यकताओ तथा समायोजन से सम्बन्धी तनाव का अध्ययन'' पर शोध।
11. त्रिपाठी के.के. (2003) – ''उड़ीसा में कार्यरत प्राथमिक विद्यालयी महिला शिक्षको के कार्य सन्तोष के सम्बन्ध में तनाव भूमिका का अध्ययन''

12. मल्लिक, आई.एस. (2003) – ''विश्वविद्यालयी खिलाड़ियो के मध्य तनाव तथा सामान्य वचन का उनके लिंग तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में अध्ययन''
13. पाण्डे, रूचि (2003) – ''संगठनात्मक पर्यावरण के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालयी अध्यापको में व्यवसायिक तनाव का अध्ययन'' पर शोध
14. गानेरी, जार्डन (2004) – ''भारतीय परिपेक्ष्य में दर्शन के विद्यार्थियो की निर्णय क्षमता का अध्ययन''
15. सिंह, हरेन्द्र (2004) – ''स्नातक महाविद्यालय के शिक्षको के मध्य तनाव का एक अध्ययन'' पर शोध
16. अग्रवाल, सरस्वती निशा (2004) ने विद्या भारतीय द्वारा संचालित कानपुर नगर के सरस्वती विद्या मंदिरो के शिक्षको की अध्यापन क्षमता का अध्ययन''
17. साहु, सुरबाला (2005)– ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अभिभावको की शैक्षिक सक्रियता के परिप्रेक्ष्य में उनके शैक्षिक ध्यानाकर्षण निज अंकन एवं शैक्षिक निर्णय क्षमताओ का अध्ययन'' पर पी.एच.डी.
18. चतुर्वेदी शोभा (2005)– 'हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्च माध्यमिक विद्यालयो के लडके व लड़कियो के जीवन वृति अभिवृति की निर्णय क्षमता के छात्र परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''
19. श्यामला मुथु सुब्रहमणीज, लोकनाथ रेड्डी (2006) ''शैक्षिक नेतृत्व तथा उत्तरदायित्व'' पर शोध
20. सैनी, धनवीर (2007) ''उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' पर शोध